SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

पारिस्थितिक पर्यटन केन्द्रों के विकास से प्रव्रजन पर प्रभाव की संभावनाः एक भौगोलिक विश्लेषण (हजारीबाग जिले के बड़कागाँव प्रखण्ड के विशेष संदर्भ में)

जितेन्दर कुमार राणा, शोधार्थी, भूगोल विभाग
सरोज कुमार सिंह, (Ph.D.) भूगोल विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
जितेन्दर कुमार राणा, शोधार्थी, भूगोल विभाग
सरोज कुमार सिंह, (Ph.D.) भूगोल विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 27/02/2023
Revised on : -----
Accepted on : 10/03/2023
Plagiarism : 00% on 27/02/2023

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: **1%**
Date: Feb 27, 2023
Statistics: 17 words Plagiarized / 2869 Total words
Remarks: Low similarity detected, check with your supervisor if changes are required.

शोध सार

वर्तमान समय में पर्यटन उद्योग सबसे तेजी से बढ़ रहे उद्योगों में से एक है, जो विश्व में सबसे ज्यादा रोजगार देने वाला है साथ हीं सभी देशों के लिए विदेशी मुद्रा प्राप्ति का भी स्रोत है। पर्यटन का संबंध खुशी, छुट्टी, यात्रा और कहीं आने–जाने से है जिसमें पर्यटक अस्थाई तौर पर अपने निवास स्थान को छोड़कर यात्रा करते हैं। पारिस्थितिक पर्यटन, पर्यटन का एक प्रकार है जिसके अंतर्गत अपेक्षाकृत अबाधित या अनियंत्रित प्राकृतिक क्षेत्रों के दृश्यों व जंगली पौधों और जानवरों के साथ–साथ इन क्षेत्रों में पाए जाने वाले किसी भी मौजूदा संस्कृति का अध्ययन करने, प्रशंसा करने और आनंद लेने के विशिष्ट उद्देश्य के साथ यात्रा किया जाता है। इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य बड़कागाँव प्रखण्ड में पारिस्थितिक पर्यटन स्थलों की वर्तमान स्थिति का पता लगाना तथा बड़कागाँव प्रखण्ड में पारिस्थितिक पर्यटन स्थलों के विकास का प्रव्रजन पर प्रभाव की संभावनाओं का पता लगाना है। संकलित आंकड़ों से यह निष्कर्ष निकलता है कि 42.4 फीसदी लोग जो अपने आर्थिक उन्नति के लिए प्रवासित होना चाहते थे, किंतु स्थानीय रूप से पर्यटन उद्योग में रोजगार मिलने से वे लोग उस रोजगार का हिस्सा बनना चाहते हैं। यह शोध पत्र प्राथमिक आंकड़ें जैसे कि साक्षात्कार एवं प्रश्नावली विधि एवं द्वितीयक आंकड़ें जैसे कि हजारीबाग की आधिकारिक वेबसाइट, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं तथा इंटरनेट इत्यादि के माध्यमों से संकलित आंकड़ों पर आधारित है। अध्ययन क्षेत्र में आंकड़ों की प्राप्ति हेतु सोद्देश्य प्रतिचयन का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधियों के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द

पर्यटन उद्योग, पारिस्थितिक पर्यटन, पर्यटक, पर्यटन स्थल, रोजगार, विकास.

परिचय

पर्यटन शब्द लैटिन भाषा के "टॉरनस" शब्द से संबंधित है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है – वह माध्यम जिससे वृत्त, घुमावदार अथवा गोल चक्के का सदृश का वर्णन संभव हो। इस प्रकार 1643 में इस शब्द का प्रयोग पहली बार एक स्थान से दूसरे स्थान के भ्रमण के लिए किया गया (शर्मा और कुमारी, 2019)। पर्यटन क्षेत्र विशेष के आगंतुक पर्यटकों एवं स्थाई निवास करने वाले नागरिकों को एवं प्राकृतिक दर्शनीय स्थलों से सामंजस्य स्थापित करने का प्रतिफल है। इस प्रकार स्थानीय निवास करने वालों एवं आय प्राप्तियों के मध्य मुख्य क्रियाकलाप स्थापित करता है (हुंजिकर एवं क्राप्फ, 1942) । पर्यटन किसी व्यक्ति विशेष द्वारा बाह्य स्थानों को एवं ठहरने के साथ–साथ एक वर्ष की अवधि हेतु विश्राम, व्यापार एवं अन्य उदेश्यों को समाहित करता है उसे ही पर्यटन कहते हैं (विश्व व्यापार संगठन)। जब लोग 24 घंटे से ज्यादा और 1 वर्ष से कम की अवधि के लिए अपने कार्यस्थल से बाहर निकलते हैं तो इस प्रकार की गतिविधियों को पर्यटन में शामिल किया जाता है (विश्व पर्यटन संगठन)। वर्तमान समय में पर्यटन उद्योग निस्संदेह सबसे तेजी से बढ़ रहे उद्योगों में से एक है जो विश्व के सभी देशों के लिए विदेशी मुद्रा प्राप्ति का एक सबसे बड़ा स्त्रोत है साथ हीं विश्व में सबसे ज्यादा रोजगार देने वाला भी है (Wood, 2002)।

वर्ल्ड ट्रैवल एंड टूरिज्म काउंसिल 2021 के नवीन रिपोर्ट के अनुसार 2019 में ट्रैवल एंड टूरिज्म दुनिया के सबसे बड़े क्षेत्रों में से एक था। वैश्विक जी.डी.पी. में इसका योगदान 10.4 प्रतिशत (9.2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर) और सभी नौकरियों के 10.6 प्रतिशत अर्थात् (334 मिलियन) के लिए जिम्मेदार था। भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक रिपोर्ट 2021–22 से पता चलता है कि पर्यटन के कारण प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष तौर पर 79.86 मिलियन (2019–20) लोगों को नौकरियाँ मिली है। इसके साथ हीं भारत के सकल घरेलु उत्पाद में 5.16 प्रतिशत (2019–20) योगदान पर्यटन उद्योग का है।

पारिस्थितिक पर्यटन, पर्यटन का एक नया उपागम है जिसकी शुरुआत 1970 के दशक में एक ऐसी अपरीक्षित विचार के रूप में उभरा जिसके द्वारा वैश्विक स्तर पर प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति आशा की एक किरण जगी (Wood, 2002)। "पारिस्थितिक पर्यटन" शब्द का प्रयोग मैक्सिको के Ceballos Lsacurian के द्वारा किया गया था। हाल के दशकों में पारिस्थितिक पर्यटन ने जैव विविधता का संरक्षण और पारिस्थितिकी पर्यटन स्थलों के आस–पास रहने वाले लोगों के उच्च जीवन स्तर एवं पारिस्थितिकीय सतत् विकास का दायरा बढ़ाने के साथ–साथ दुनिया भर का ध्यान आकर्षित किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ, पारिस्थितिक पर्यटन को एम.डी.जी. को प्राप्त करने और ग्रामीण क्षेत्रों में विकास को तेजी लाने का प्रमुख तरीकों में से एक मानता है। पारिस्थितिक पर्यटन, पर्यटन का एक नया उपागम है जो पर्यटन उद्योग में तीव्र गति से बढ़ता हुआ विकसित सेक्टर है। ग्लोबल इकोनामी में इसका अनुमानित वार्षिक वृद्धि दर 10.15 प्रतिशत है (Alex, 2018)।

वर्तमान समय में पर्यटन एवं प्रवास के बीच गहरा संबंध देखा जा सकता है। पर्यटन उद्योग वर्तमान समय में सबसे अधिक रोजगार देने वाला उद्योग बन गया है। किसी भी क्षेत्र में प्रवसन के अनेक कारण हो सकते हैं जिनमें प्राकृतिक और मानवीय कारण प्रमुख कारण है। प्राकृतिक कारणों में प्राकृतिक आपदाएँ जैसे – भूकंप, ज्वालामुखी, हिमस्खलन, भूस्खलन, सुनामी इत्यादि तथा मानवीय कारणों में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार की प्राप्ति तथा राजनीतिक अस्थिरता आदि कारणों से लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर प्रवासित होते हैं। किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह द्वारा अपना निवास स्थान छोड़कर अन्य स्थान के लिए स्थायी अथवा अस्थायी रूप से किया गया परिवर्तन जनसंख्या प्रवास कहलाता है (सिंह और मौर्या, 2021)। अध्ययन क्षेत्र बड़कागाँव में अधिकांश प्रवसन रोजगार की प्राप्ति हेतु भी होता है।

बड़कागाँव प्रखण्ड चारों तरफ से पहाड़ों से घिरा हुआ है जिसके कारण यहाँ घने जंगलों के साथ–साथ अनेक

जलप्रपात देखने को मिलते हैं। इसके साथ हीं मानव सभ्यता विकसित होने के साक्ष्य एवं मेगालिथ जहाँ इक्वीनॉक्स जैसी खगोलीय घटनाएँ भी देखने को मिलती है। इस प्रकार इस्को गुफा, बरसो पानी, डुमारो जलप्रपात, गट्टीकोचा जलप्रपात तथा बरवाडीह का मेगालिथ स्थल यहाँ के प्रमुख पारिस्थितिक पर्यटन स्थल हैं, जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। हालांकि ये पर्यटक वर्ष भर घुमने के लिए आते रहते हैं लेकिन, वर्ष के कुछ विशेष महिनों में पर्यटकों की काफी भीड़ रहती है। यदि इन पर्यटन स्थलों को और अधिक विकसित किया जाता है तो पर्यटन स्थलों के आस–पास रहने वाले लोगों को विशेषकर रोजगार की प्राप्ति होने से प्रवास की दर में गिरावट होगी ऐसी संभावना व्यक्त किया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र

बड़कागाँव प्रखण्ड उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल के हजारीबाग जिला का अभिन्न अंग है। बड़कागाँव प्रखण्ड का विस्तार 23°41′5″ उत्तरी अक्षांश से 23°58′15″ उत्तरी अक्षांश तथा 85°8′20″ पूर्वी देशांतर से 85°24′42″ पूर्वी देशांतर तक है। इसका कुल क्षेत्रफल 447.9 वर्ग कि.मी. है। समुद्र तल से इसकी उंचाई 508 मीटर है। बड़कागाँव प्रखण्ड हजारीबाग जिले के दक्षिणी भाग में अवस्थित है। यह प्रखण्ड उत्तर में कटकमसांडी और हजारीबाग अंचल, दक्षिण में बुड़मू अंचल (रांची जिला) और पतरातु अंचल (रामगढ़ जिला), पूर्व में चुरचू अंचल (मांडू थाना) तथा पश्चिम में केरेडारी अंचल से घिरा हुआ है। बड़कागाँव प्रखण्ड में कुल 23 पंचायत है जिसके अंतर्गत 82 गाँव है और एक जनगणना शहर उरीमारी है। 2011 की जनगणना अनुसार इस प्रखण्ड की कुल जनसंख्या 1,10,958 है जिसमें 1,31,831 ग्रामीण तथा 4,948 शहरी है। यहाँ 70,358 पुरूष तथा 66,481 महिला जनसंख्या है। बड़कागाँव प्रखण्ड की साक्षरता दर 65.44 प्रतिशत है। यहाँ की प्रमुख पारिस्थितिक पर्यटन स्थलों में बरसो पानी, इस्को गुफा, डूमारो जलप्रपात, पंकरी बरवाडीह का मेगालिथ तथा गट्टी कोचा झरना प्रमुख है, जो पर्यटकों का मन मोह लेते है। डुमारो नदी, हहारो नदी, बदमाही नदी, संढ़ी नदी तथा चिरैया नदी बड़कागाँव की प्रमुख नदियाँ है।

(मानचित्र : बड़कागाँव का मानचित्र)

उद्देश्य

1. बड़कागाँव प्रखण्ड में पारिस्थितिक पर्यटन स्थलों की वर्तमान स्थिति का पता लगाना।
2. बड़कागाँव प्रखण्ड में पारिस्थितिक पर्यटन स्थलों के विकास का प्रव्रजन पर प्रभाव की संभावनाओं का पता लगाना।

विधितंत्र

यह शोध पत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक आंकड़ों की प्राप्ति हेतु अनुसूची विधि का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक आंकड़ों की प्राप्ति हजारीबाग की आधिकारिक वेबसाइट, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं तथा इंटरनेट इत्यादि के माध्यमों से की गई है। अध्ययन क्षेत्र में आंकड़ों की प्राप्ति हेतु प्रतिचयन का प्रयोग हुआ है जिसके अंतर्गत सोद्देश्य प्रतिचयन का प्रयोग किया गया है। यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधियों पर आधारित है।

विवेचना

बड़कागाँव प्रखण्ड में पारिस्थितिक पर्यटन स्थलों की वर्तमान स्थिति। बड़कागाँव प्रखण्ड के प्रमुख पारिस्थितिक पर्यटन स्थलों की वर्तमान स्थिति संक्षिप्त विवरण निम्न है:

बरसो पानी

बरसो पानी दुनिया का हैरतअंगेज स्थल है। यह पर्यटन स्थल हजारीबाग जिले के बड़कागाँव प्रखंड मुख्यालय से 22 किलोमीटर दूर स्थित है। बड़कागाँव के आंगो पंचायत के झिकझोर पहाड़ी की तलहटी में स्थित है। हजारीबाग जिले के बरसो पानी में नाग फन आकार का विशाल चट्टान है। इस चट्टान के नीचे जोर से चिल्लाने एवं ताली बजाने से जल की बुंदे टपकने लगती है। ऐसा हैरतअंगेज कारनामा देखकर लोग दांतों तले उंगलियां दबा लेते हैं, जबकि इसके इर्द–गिर्द पानी का स्रोत नहीं है।

(चित्र : बरसो पानी)

वैसे तो हर रोज पर्यटकों का आगमन होता रहता है, लेकिन दिसम्बर माह से लेकर फरवरी माह तक पिकनिक मनाने वालों की भीड़ बढ़ जाती है। बरसो पानी से 4 किमी दूर दामोदर नदी है। इस पर्यटन स्थल के आस–पास होटल एवं रात्रि विश्राम जैसी सुविधाओं की कमी है (प्रभात खबर, हजारीबाग, 28 दिसंबर 2020)।

इस्को गुफा

हजारीबाग जिला के बड़कागाँव प्रखण्ड स्थित नापोकला पंचायत में विश्वप्रसिद्ध पाषाण कालीन इस्को गुफा है। इस गुफा की खोज सितम्बर 1991 को हजारीबाग के बूलू इमाम ने की थी। इस्को गाँव के समीप अवसारा पहाड़ी शृंखला के सती पहाड़ पर शेषनाग क्षत्र की आकृति वाली शैलदीर्घा है। इसकी लम्बाई लगभग 100 मीटर है। शैलदीर्घा में चित्र लिपि है। 100 मीटर लम्बी विशाल चट्टान में 500 फुट तक काफी चित्र लिपि अंकित है। इन चित्रों में आदमी, गाय, हिरण, खरगोश, नदियाँ, सूर्य, ईश्वर आदि के चित्र अंकित है। चट्टान की उंचाई 26 फीट है। विशालकाय शैलदीर्घा को रक्तिम लौह के हेमेटाइट को कूट–कूट एवं पीसकर तैयार किये गए रंग से रंगा गया है। चित्रों में कहीं–कहीं चूने अथवा पत्थरों से निर्मित सफेद रंग का भी प्रयोग किया गया है। इस्को की शैलदीर्घा के उपर विशाल विस्तृत चट्टान के छत के नीचे विशाल गुफा है। इस गुफा का विस्तृत चट्टान लगभग 6 एकड़ में फैला हुआ है। शैलदीर्घा में बनाये गए चित्र के अनुसार यह वही सूर्य मंदिर हो सकता है। इस मंदिर के 100 से अधिक

स्तंभ अभी भी इस गुफा में है। इस गुफा की सभ्यता को दामोदर घाटी सभ्यता का नाम दिया गया है। बड़कागाँव प्रखण्ड के चारों ओर छोटे–बड़े दर्जनों गुफाएँ है। इस गुफा में हथौड़ी (फेंककर चोट पंहुचाने के लिए), भाले की नोक (चमड़ा छिलने के लिए) एवं छोटे धारदार चाकू आदि औजार सम्मिलित है (प्रभात खबर, दिना इस पर्यटन स्थल के आस–पास होटल एवं रात्रि विश्राम जैसी सुविधाओं की कमी है। साथ हीं इस पर्यटन स्थल तक पहुंचने के लिए नापो से इस्को गुफा के बीच सड़क मार्ग की स्थिति जर्जर है (प्रभात खबर, हजारीबाग, 14 अक्टूबर 2020)।

चित्रः इस्को गुफा (बाएँ) और शैलदीर्घा में चित्र लिपि (दाएँ)

डुमारो जलप्रपात

यह बड़कागाँव प्रखण्ड मुख्यालय से 6 किमी दूर डुमारो में स्थित है। डुमारो गुफा के सामने लगभग 100 मीटर की उंचाई से पानी गिरता है। जिस स्थल पर पानी गिरता है वहाँ छोटी सी झील बन गई है। उस झील से जल निकलकर लगभग 100 मीटर नीचे तक चट्टानों को काटते हुए डुमारो नदी में जा मिलती है। इस क्रम में मुलायम चट्टानें अपरदित होकर बह जाती है तथा कठोर चट्टानें सीढ़ीनुमा जैसी दिखलाई पड़ती है, जिससे कैस्केड (Cascade) का निर्माण होता है। झरने की कल–कल और छल–छल करती आवाज दूर से हीं लोगों को सुनाई देने लगती है। डुमारों नदी का उद्गम स्थल डुमारो जलप्रपात हीं है। यह नदी दामोदर नदी की सहायक नदी है। (प्रभात खबर, हजारीबाग, 2020)।

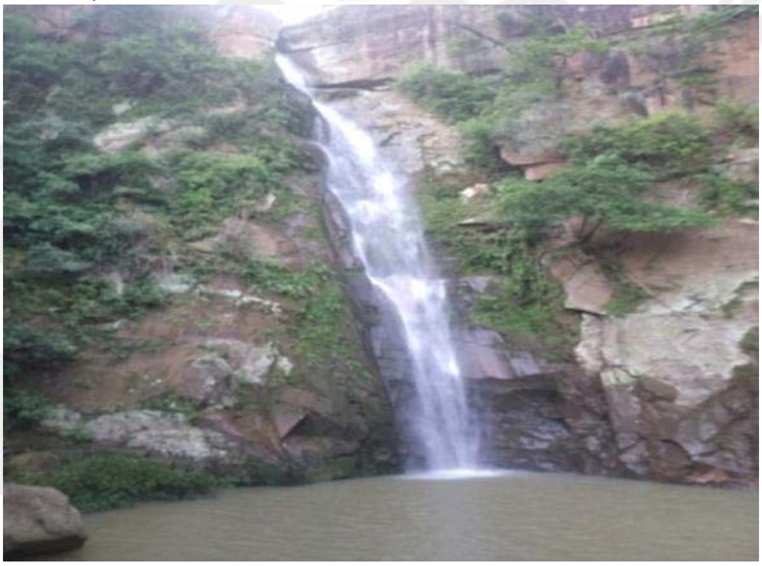

(चित्रः डुमारो जलप्रपात)

पकरी–बरवाडीह का मेगालिथ स्थल

बड़कागाँव प्रखण्ड मुख्यालय से 4 किमी की दूरी पर बड़कागाँव–हजारीबाग मार्ग में पकरी–बरवाडीह में मेगालिथ स्थल है। इस पर्यटन स्थल की सबसे बड़ी विशेषता यहाँ 21 मार्च और 23 सितम्बर को विषुव या इक्वीनॉक्स का अद्भुत दृश्य दिखलाई पड़ना है। इसी विशेषता के कारण पर्यटक इस पर्यटन स्थल को देखने के लिए आकर्षित

होते हैं।

(चित्रः पकरी–बरवाडीह का मेगालिथ स्थल)

गट्टीकोचा जलप्रपात

गट्टीकोचा जलप्रपात बड़कागाँव प्रखण्ड मुख्यालय से 16 किमी की दूरी पर मौतरा गाँव की खूबसूरत पहाड़ियों के बीच में स्थित है। यहाँ लगभग 25 मीटर की उंचाई से जल नीचे गिरती है। पिछड़े क्षेत्र में स्थित होने के कारण यह पर्यटन स्थल विकसित नहीं हो पाया है। स्थानीय लोगों के अनुसार यहाँ प्रतिदिन 30–40 पर्यटक आते हैं।

(चित्रः गट्टीकोचा जलप्रपात)

बड़कागाँव प्रखण्ड में पारिस्थितिक पर्यटन स्थलों के विकास का प्रव्रजन पर प्रभाव की संभावना

बड़कागाँव प्रखण्ड में पारिस्थितिक पर्यटन स्थलों के विकास का प्रव्रजन पर प्रभाव की संभावनाओं का पता लगाने हेतू प्राथमिक आंकड़ों की प्राप्ति, प्रश्नावली विधि के माध्यम से बड़कागाँव प्रखण्ड के पारिस्थितिक पर्यटन स्थलों के आस–पास किया गया। यह आंकड़ा 1 किलोमीटर के दायरे में निवास करने वाले लोगों से की गई है। लोगों की उम्र 20–50 वर्ष के बीच है जिनमें महिलाएं एवं पुरूष दोनों शामिल है, कुल नमूनों की संख्या 40 है।

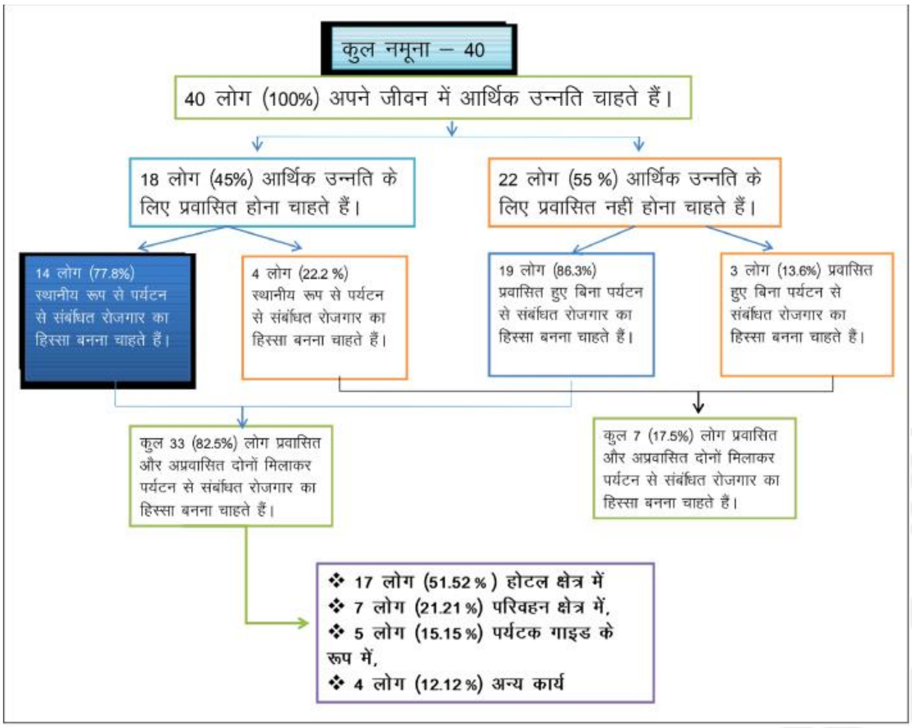

(चित्रः प्रवाह चार्ट के माध्यम से संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण)

परिणाम / प्राप्ति

कुल 40 लोगों में से 33 लोग स्थानीय रूप से सृजित रोजगार का हिस्सा बनना चाहते हैं, जबकि 7 लोग स्थानीय रूप से सृजित रोजगार का हिस्सा नहीं बनना चाहते हैं। 33 लोगों को (अब 100 प्रतिशत) यह पूछने पर कि वे पर्यटन स्थलों के विकास से उत्पन्न रोजगार का कौन सा लाभ उठाना चाहेंगे तो होटल उद्योग के क्षेत्र में 51.51 प्रतिशत, परिवहन क्षेत्र में 21.21 प्रतिशत, स्थानीय पर्यटक गाइड के तौर पर 15.15 प्रतिशत तथा अन्य क्षेत्र में 12.12 प्रतिशत लोग रोजगार के रूप में चयन किये।

विश्लेषण

संग्रहित आंकड़ों के उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि अध्ययन क्षेत्र बड़कागाँव प्रखण्ड में पारिस्थितिक पर्यटन स्थलों के आस–पास रहने वाले लोगों में शत–प्रतिशत लोग अपने जीवनशैली में आर्थिक उन्नति चाहते हैं। आर्थिक उन्नति के लिए 18 लोग (45 प्रतिशत) प्रवासित होना चाहते हैं जबकि 22 लोग (55 प्रतिशत) प्रवासित हुए बिना हीं आर्थिक उन्नति प्राप्त करना चाहते हैं।

18 लोग (45 प्रतिशत) जो आर्थिक उन्नति के लिए प्रवासित होना चाहते हैं उनसे यह प्रश्न पुछने पर कि यदि यहाँ पर स्थानीय रूप से पर्यटन से संबंधित रोजगार का सृजन किया जाता है तो उनमें से 14 लोग (77.7 प्रतिशत) रोजगार का हिस्सा बनना चाहते हैं तथा 4 लोग (22.3 प्रतिशत) रोजगार का हिस्सा नहीं बनना चाहते हैं जबकि 22 लोग (55 प्रतिशत) आर्थिक उन्नति प्राप्त करने के लिए प्रवासित नहीं होना चाहते हैं लेकिन 19 लोग (86.3 प्रतिशत) स्थानीय रूप से सृजित रोजगार का हिस्सा बनना चाहते हैं जबकि 3 लोग (13.6 प्रतिशत) रोजगार का हिस्सा नहीं बनना चाहते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि 40 लोगों (100 प्रतिशत) में से 33 लोग (82.5 प्रतिशत) स्थानीय रूप से पर्यटन से संबंधित रोजगार का हिस्सा बनना चाहते हैं जबकि 7 लोग (17.5 प्रतिशत) अपनी आर्थिक उन्नति के लिए न तो स्थानीय रूप से काम करना चाहते हैं और न हीं पर्यटन से सृजित रोजगार का हिस्सा बनना चाहते हैं।

ऊपर के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि कुल 33 लोग (अब 100 प्रतिशत) जो रोजगार का हिस्सा बनना चाहते हैं उनमें से 17 लोग (51.52 प्रतिशत) होटल क्षेत्र में, 7 लोग (21.21 प्रतिशत) परिवहन क्षेत्र में, 5 लोग (15.

15 प्रतिशत) पर्यटक गाइड के रूप में, तथा 4 लोग (12.12 प्रतिशत) अन्य कार्यों में संलग्न होंगे।

आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि कुल 33 लोग जो स्थानीय रूप से पर्यटन से संबंधित सृजित रोजगार का हिस्सा बन रहे हैं उनमें से 14 लोग अर्थात् 42.2 प्रतिशत जो रोजगार की प्राप्ति हेतू अन्य क्षेत्रों की ओर प्रवासित हो रहे थे, वे पर्यटन उद्योग में रोजगार मिलने से प्रवासित नहीं होंगे ऐसी संभावना है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

पारिस्थितिक पर्यटन, प्राकृतिक क्षेत्रों की जिम्मेदार यात्रा के रूप में है जो पर्यावरण का संरक्षण करता है और स्थानीय लोगों के कल्याण में सुधार करता है। विश्लेषित आंकड़ो से पता चलता है कि 33 लोग (82.5 प्रतिशत) स्थानीय रूप से पर्यटन से संबंधित रोजगार का हिस्सा बनना चाहते हैं जबकि 7 लोग (17.5 प्रतिशत) पर्यटन से सृजित रोजगार का हिस्सा नहीं बनना चाहते हैं। 33 लोग (अब 100 प्रतिशत) में से 14 लोग अर्थात् 42.4 प्रतिशत जो रोजगार की प्राप्ति हेतू अन्य क्षेत्रों की ओर प्रवासित हो रहे थे, वे पर्यटन उद्योग में रोजगार मिलने से प्रवासित नहीं होंगे जबकि 19 लोग अर्थात् 57.6 प्रतिशत बिना प्रवासित हुए पर्यटन से सृजित रोजगार का हिस्सा नहीं बनना चाहते हैं।

बड़कागाँव प्रखण्ड में सौंदर्य से परिपूर्ण पारिस्थितिक पर्यटन स्थल मौजुद है लेकिन स्थानीय लोगों का इन पर्यटन स्थलों के प्रति निराशावादी दृष्टिकोण एवं सरकारी सहयोग के अभाव के कारण पारिस्थितिक पर्यटन स्थलों का पूर्ण रूप से विकास नहीं हो पाया है। परिणामस्वरूप, पर्यटन स्थलों के आस–पास रहने वाले लोगों की आर्थिक स्थिति निम्न है, जिसके कारण यहाँ रहने वाले लोग अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए रोजगार की प्राप्ति हेतू अन्य क्षेत्रों की ओर प्रवासित होते हैं। वर्तमान समय में पर्यटन उद्योग रोजगार देने के मामले में तेजी से बढ़ता हुआ क्षेत्र है। बड़कागाँव प्रखण्ड में पर्यटन स्थलों को विकसित करने के साथ–साथ पर्यटन से संबंधित आधारभूत सुविधाएँ जैसे परिवहन, होटल, विश्राम गृह, बैकिंग तथा मनोरंजन के साधन आदि सुविधाएँ विकसित होने से रोजगार का सृजन होगा एवं सृजित रोजगार से अन्य क्षेत्रों की ओर होने वाले प्रवास की प्रवृति में गिरावट होगी साथ हीं स्थानीय लोगों की आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी, ऐसी संभावना है क्योंकि आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि 82.5 प्रतिशत लोग स्थानीय रूप से सृजित रोजगार का हिस्सा बनना चाहते है।

संदर्भ सूची

1. बंसल, सुरेश चन्द्र (2019). *पर्यटन भूगोल एवं यात्रा प्रबन्धन,* मेरठ, मीनाक्षी प्रकाशन.
2. मौर्या, एस. डी. (2021). *जनसंख्या भूगोल, प्रयागराज,* शारदा पुस्तक भवन.
3. https://tourism.gov.in/sites/default/files/2022-07/Annual%20Report%202021-22%20%28Hindi%29.pdf
4. https://www.prabhatkhabar.com/state/jharkhand/hazaribagh/isko-cave-of-barkagaon-needs-protection-the-existence-of-rock-paintings-is-being-erased-smj
5. https://www.prabhatkhabar.com/state/jharkhand/hazaribagh/new-year-2021-rain-starts-clapping-in-barso-pani-hazaribagh-jharkhand-see-exclusive-photos-jharkhand-tourism-grj
6. https://hazaribag.nic.in
7. Kumari Sarita & Sharma S.K.: *Jharkhand Mein Paryatan Evam Vikas,* New Delhi, Rajesh Publication.
8. Narayan Abhinav, (2017): *Jharkhand the home of Multi-Dimensional Tourism,* New Delhi, Rajesh Publication.
9. PRASAD, D. B. Sustainable Eco-Tourism Development a Case Study of Jharkhand State.

10. Prasad Kamla & Sarkar Prasenjit (2014). *Tourism in Jharkhand,* New Delhi, Rajesh Publication.

11. Sarkar Prasenjit (2018). *Tourist Spots in Jharkhand,* New Delhi, Rajesh Publication.

12. Saw, P. K., Ecotourism In Jharkhand: Change Impact And Opportunity

13. Singh, Saroj (2019): *Contemporary Research Methods and Their Applications,* New Delhi, Rajesh Publication.

14. Sulaiman, Mohmmad & Kumar, Dinesh(2010): *Research Methods in Psychology,* Sociology and Education, Patna, General Book Agency

15. "What is Ecotourism?, The International Ecotourism Society". Www.ecotourism.org. Retrieved 2016-11- 17.

****